

Date: 23.1.2022

B.A (Hons)

Dr. Deepak Kumar Royak  
Assistant professor  
Dept of History  
S.R.A.P College

13

THURSDAY

इतिहास के अद्ययन में मार्क्सवाद की भूमिका।

मार्क्स ने पूंजीवाद पर सामाजिक इतिहास लिखा।  
उसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि जिस  
आप पूंजीवाद कहते हैं या साम्यवाद कहते हैं वह महज एक  
उत्पादन की प्रणाली नहीं है वह एक राजनीतिक, सामाजिक  
पद्धति है, वह एक सांस्कृतिक उत्पत्ति है तब उसने  
एक इतिहास की व्याख्या की। उसका फेरम था  
इन्डिअलमिक सोशलिज्म।

एन्टोनियो ग्राम्शी (इटली) - मार्क्स के सिद्धांत को परिवर्तित किया

- मार्क्स, मैक्स वेबर, मैक्स मूलर - एलिजा किं कर्जी यत्रा नहीं की
- थ्यूअर्क ट्रिब्यून - 1855 के में मार्क्स ने थ्यूअर्क में लिखा 1858
- में उसने 1857 के विश्लेषण से प्रभावित होकर जर्मन के कार्य
- में लिखा।

एलिजाई उत्पादन प्रणाली - एलिजा में तो

उपर निरंकुश राजतंत्र है और नीचे प्रांतीय समाजवाद है  
प्रांतीय विकुश (निरंकुश शासक के लक्ष्य में यह अवधारणा  
इ उग्र का भाग। यह फेरम पहले J. S. मल्ला के द्वारा  
दिया गया था Oriental despotism शब्द दिया।

और जो निरंकुश शासक है वह अपनी नीकरवादी कारि-  
सिद्धि व्यवस्था पर नियंत्रण रखता है और अविनाशनीय  
पा का के रूप में ले लेता है और थोड़ा सा मात्र जो कम  
जाता है उस पर किसान अपना गुंजा बसा करते हैं यह आ-  
इस तरह से यह व्यवस्था सुकरी वर्षों से चलती आ रही है  
आज भी समाज अपरिवर्तनीय है, उसके परिवर्तन के  
गुण नहीं है आज आजाय समाज में परिवर्तन होगा है  
तो कोई बाहरी तत्व के कारण ही होगा है। उसका  
मानना है कि आजाय समाज में परिवर्तन होगा तो  
ख्रिश्चान दुकूमन अजान ही परिवर्तन ला देगा। यह

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का पक्ष नहीं ले रहा है लेकिन कहीं-कहीं उसमें भी युरोपीय अंशका का डी-युका है।

- माकड़ेवादी इतिहास लेखक कार्ल माकड़े का अनुभव नहीं है, क्योंकि जो भारतीय माकड़ेवादी है वह कार्ल माकड़े के विरोध में लिखा है, माकड़े को भारतीय माकड़ेवादी एक नहीं है लोगो में वही फर्क है जो लाल सेक लाली में है।

- उसने कार्ल माकड़े के दान्दाल्मक सिद्धांत को तो खिन्न किया लेकिन उसके एडिगा उत्पादन प्रणाली के सिद्धांत को सबसे अधिक challenge माकड़ेवादी विद्वानों ने किया है। उसने कहा कि हम इस बात को नहीं मानते कि भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है, भारत आज में भी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होगा है कार्यव्यवस्था में होने वाले परिवर्तन के साथ राजनीति में, समाज में, एवं संस्कृति में परिवर्तन होगा चलता है। सबसे पहले D.D. कौशिकी, B.N. हन्ना ने ही माकड़ेवादी विद्वान, मि-होने प्रथम काल के इतिहास का अध्ययन किया और उन्होंने यह मान्यता रखी

की थी R.S. Sharma, D.N. Jha, V.N. Pandey है ये माकड़ेवादी परम्परा के विद्वानों के रूप में उभरे।

मध्यकालीन इतिहास में सबसे पहले मां डीवीव (अलीगढ़ विश्वविद्यालय में इतिहास के विभागाध्यक्ष) ने 1952 में "महमूद वी गजनी" लिखकर सबसे पहले माकड़ेवादी इतिहास लेखन की नींव डाली। फिर उसके बाद इरफान डीवीव भी माकड़ेवादी विद्वान रहे हैं। आधुनिक भारत के इतिहास में खनी फाम हत, एच. आर. प्रेसाई, ए. ए. एन. राय

ये सब मार्क्सवादी इतिहास लेखन के रूप में काम किया। लेकिन ये सब पहली पीढ़ी के लेखक हैं इनके लेखन में थोड़ी सी सुदृष्टि मिल रही है जिसको कुछ हद तक सुधारा है विपिन चन्द्र, आरिंद्या मुखर्जी, मृदुला मुखर्जी

जहाँ तक सीमाओं की बात है तो कोई गी-विचार-व्यापक अपने आप में पूर्ण नहीं होती, न कोई व्यक्ति पूर्ण होता है और न संस्था पूर्ण होती है सबकी अपनी सीमा है लेकिन यह मान लेना कि मार्क्सवादी इतिहास ने भारतीय इतिहास का अपकार किया है यह मान लेना किन्तुल गतर है।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन के उद्भव से पहले राजवंश का इतिहास लिखा जाता था। राजाओं के बारे में उसके युद्ध के बारे में, उसके धरना क्रम के बारे में इतिहास में तारीखें महत्वपूर्ण होती थीं।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने सबसे पहला काम यह किया उसने कहा कि देवों इतिहास में परिवर्तन महत्वपूर्ण है परिवर्तन कि जड़ उठाने आर्थिक परिवर्तन में लौजा। उन्होंने कहा कि जब आर्थिक परिवर्तन होता है तो राजा समाज एवं संस्कृति में परिवर्तन होता-पलटा है। पहले तो ~~उन्होंने~~ इतिहास के अध्ययन में अर्थव्यवस्था और समाज को लीया। इसके पहले अर्थव्यवस्था और समाज की चर्चा बहुत कम होती थी।

राष्ट्रवादी विद्वानों ने भारतीय समाज का आदर्श रूप प्रस्तुत किया लेकिन मार्क्सवादी विद्वानों ने पूर्व मध्य काल का concept लाया। पल्लु उनकी सीमा लमा थीं उनकी सीमा मध्य की-की हर कुछ को आर्थिक कारण से देवों

सल्तनत कालीन स्थापत्य

भारत में स्थापत्य की प्राविण्य बॉली (बाल्सीरी बॉली) प्रचलित थी। इस बॉली की विशेषता होती थी स्थापत्य में समक एवं शस्त्रीर का प्रयोग। वहीं इसी तरह भारत में तुर्की लोग मेहराबी बॉली (अरकुस्त बॉली) लेकर आए थे। अरकुस्त बॉली के अंतर्गत मेहराब एवं गुंबद का उपयोग होता है। यह बॉली विजेन्द्रिकायी बॉली से ली गई थी। चूंकि इस प्रकार के स्थापत्य में समकों का प्रयोग नहीं होता है इसलिए मजबूती देने के लिए गार (Mortar) के रूप में चूना तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया।

आरंभिक स्थापत्य

जब भारत में तुर्की का आगमन हुआ तो आरंभ में उनके पास नए प्रकार के स्थापत्य का पक्का नहीं था इसलिए उन्होंने भारत में कुछ प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में बाल लिया। उदाहरण के लिए - कुतुबुद्दीन ऐबक ने - दिल्ली में कुवातुल ईस्लाम मस्जिद, अजमेर - में बड़ी मिन का मीना का निर्माण किया।

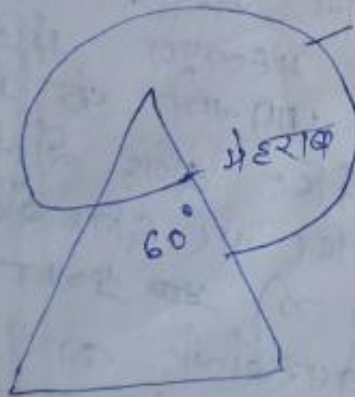
सल्तनत काल के स्थापत्य

किन्तु भारत में स्थापत्य लेने के पश्चात् उन्होंने स्वयं रूप में स्थापत्यों का निर्माण आरंभ किया चूंकि उन्होंने इस्लामी स्थापत्य के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया। कालांतर में भारतीय स्थापत्य की बॉली से मुस्लिम

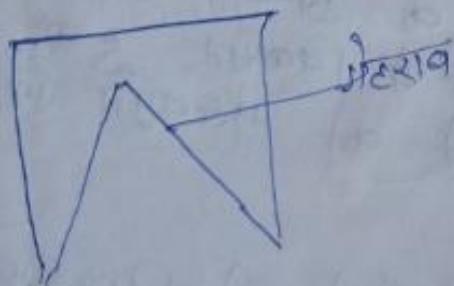
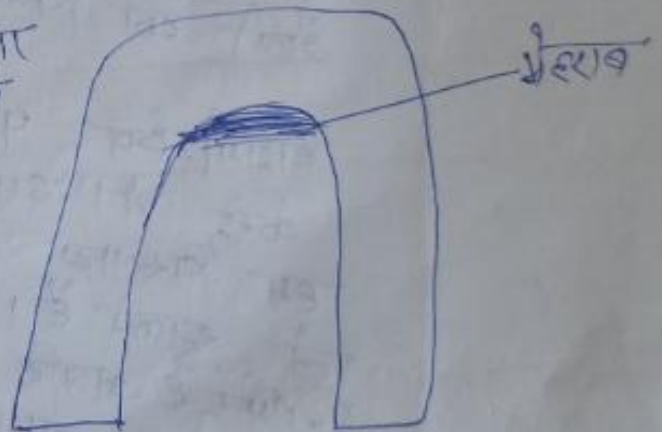
स्थापत्य का प्रभाव होना बहुत ही एकाधिक था। फिर आगे विभिन्न देशों के अन्वीन मेहराबों शैली- तथा शहरी शैली के बीच कृमिक सामंजस्य होता रहा तथा फिर इस सामंजस्य के परिणामस्वरूप एक स्वतंत्र भारतीय शैली का विकास हुआ।

द्वितीय शताब्दी के अन्वीन इतिहास के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरंभ किया गया। उदा- के लिए उदात्त कुम्भक के द्वारा स्थापत्य कुम्भ गीना के कार्य को पूरा करा। फिर उसमें अपने वेद राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान - ए - गरी का निर्माण कराया। आज कलकत्ता का मकबरा का एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का उदाहरण माना जाता है तथा यह बताया जाता है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैमानिक प्रकार के गुम्बर का विकास हुआ। किन्तु नवीन शैली में यह स्थापत्य होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाउद्दीन दरवाजा प्रथम वैमानिक प्रकार के मेहराब तथा गुम्बर का उदाहरण है।

वैमानिक



वैमानिक प्रकार के मेहराब (360°)



वैमानिक प्रकार के मेहराब